श्री अनंतनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री अनंतनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.- 9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री अनंतनाथ विधान

जय बोलिये

अनन्त पापों के हर्त्तारी,
अनन्त गुणों के भण्डारी,
अनन्त दर्शी, अनन्त ज्ञानी,
अनन्त सुखी, अनन्त ध्यानी,
अनन्त शक्ति सम्पन्न
अनन्त अन्तर्मुखी, प्रसन्न,
अनन्त आत्मा में लीन,
अनन्त ज्ञान में प्रवीण,
अनन्त ज्ञायक, अनन्त दायक,
अनन्त होकर एक-एक होकर अनन्त
परमपूज्य
श्री अनन्तनाथ भगवान् की जय॥

भजन

हे! अनंतनाथ स्वामी, यही भावना है।
मुझे अपना बना लो, मेरी प्रार्थना है॥

तेरी ही कृपा से, तेरे दर पे आके
मैं खुश हूँ बहुत ही, तेरा दर्श पाके।
बनूँ दर्शन के काबिल, यही याचना है॥[2]
मुझे अपना..... ॥ 1॥

इक तेरे इशारे पै, हम सब कुछ छोड़ देंगे
तेरा नाम जपके सब, रिश्ते नाते तोड़ देंगे।
बस तुझसे हो नाता, यही कामना है॥[2]
मुझे अपना..... ॥ 2॥

मेरी प्रार्थना तुम स्वामी ना भुलाना।
'सुव्रत' को अपने सम, तुरत ही बनाना।
तेरी अर्चना ही, मेरी साधना है॥[2]
मुझे अपना..... ॥ 3॥

श्री अनंतनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

अनंतगुणी है आतमा, सर्वसुखी भरपूर।
अनंतप्रभु उसके प्रभु, नमोस्तु जिन्हें जरूर॥

(हरिगीतिका)

प्रभु आपकी पद वन्दना से, शुद्धता से उर खिले।
हर कष्ट कटते भव-भवों के, पुण्य की पंक्ति मिले॥
पातक कटें गुण चिंतनों से, शीघ्र ही निज भान हो।
फिर आप जैसी शुद्ध निर्मल, चेतना का ज्ञान हो॥
हम आपके पथ पर चलें पदवी मिले अरिहन्त की।
इससे रचायी अर्चना प्रभु परम पूज्य अनन्त की॥
है प्रार्थना केवल हमारी भक्ति नैया थाम लो।
मृत्यु महोत्सव हो हमारा, कण्ठ में प्रभु नाम हो॥

(दोहा)

अनंत स्वामी को नमन, करें वंदना आज।
भक्ति पुष्प हम, तुम करो, भक्त हृदय पर राज॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं....)

(पंचचामर/तोमर)

हमें मिली स्वजन्म से हि मृत्यु की महा सजा।
मिला नहीं इलाज या मिली नहीं यहाँ दवा॥
करें निजात्म को निरोग नीर को चढ़ाय के।
अनंतनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं.....।

अनादि से जले, तपे मिली सदा अशांति है।
कहाँ मिले जिनेन्द्र छाँव आत्म रूप शांति है॥
करें निजात्म को सुशीत शीत को चढ़ाय के।
अनंतनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

विनाशवान ही हमें मिला सदैव विश्व में।
दिखा स्वरूप आपका, मिले हमें भविष्य में॥
करें निजात्म अक्षयी सुपुंज को चढ़ाय के।
अनंतनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

जिसे स्व-वीतरागता जिनेश रूप भाएगा।
विकार का विभाव काम तो विराम पाएगा॥
करें निजात्म को सुशील पुष्प को चढ़ाय के।
अनंतनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

शरीर है नहीं शरीफ भूख प्यास से दुखी।
अपूर्ण कामना न ज्ञान के बिना रहे सुखी॥
करें निजात्म पूर्ण तृप्त कामना चढ़ाय के।
अनंतनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

महान् मोह की घटाएँ आत्मकक्ष ढाँकती।
महारती जिनेन्द्र की महान् मोह नाशती॥
भरें निजात्म ज्ञान से सुदीप ये जलाय के।
अनंतनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

लकीर हाथ की भरी विभाव गंध कीच से।
निकालिये हमें अनन्त कर्म-बंध बीच से॥

भरें निजात्म गंध से सुगंध को चढ़ाय के।
अनंतनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

अनन्त जन्म लक्ष्य के अभाव में गँवा दिये।
फलों भरी चिदात्म को कषाय से जला दिये॥
मिले निजात्म आत्म को फलात्म के चढ़ाय के।
अनंतनाथ को नमन्, उपासना रचाय के॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

अनन्त विश्व में फँसे, अनन्त राग-द्वेष से।
अनन्त कष्ट भोगते अनन्त बार क्लेश से॥
अनन्त बार नर्क की अनन्त बार स्वर्ग की।
अनन्त बार वेदना अनन्त बार दर्द की॥

अनन्त बार की कथा अनन्त बार छोड़ दी।
अनन्त तो मिले नहीं अनन्त शर्त तोड़ दी॥
हमें अनन्त नाथ जी बुलाइये अनन्त में।
अनन्त-धर्म दीजिए मिलाइये अनन्त में॥

(सोरठा)

मिले यही वरदान, अनंतप्रभु भगवान् से।
अर्पित अर्घ महान्, वन्दन मन वच प्राण से॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

एकम् कार्तिक कृष्ण को, तज सोलह सुर इन्द्र।
जयश्यामा के गर्भ में, आए अनन्त जिनेन्द्र॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बारस कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्में बाल अनन्त।
सिंहसेन नृप के यहाँ, बाजे ढोल मृदंग॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

उसी जन्म तिथि में हुआ, शुभ दीक्षा कल्याण।
स्वामी संत अनन्त को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कृष्णा चैत्र अमास को, कर्म नशा ये चार।
बने अनन्त अरिहन्त जी, जिन्हें नमोस्तु बहुबार॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

उसी ज्ञान तिथि में गये, मोक्ष, अनन्त ऋषीश।
सम्मेदाचल को नमन, मिले अनन्ताशीष॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

अनन्त गुण भण्डार हैं, प्रभु अनन्त भगवान।
अनन्त गुण पाने करें, बारम्बार प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

जो कुछ नाथ! आपने चाहा, उसे आपने प्राप्त किया।
निजी वज्र पौरुष से स्वामी, भव का चक्र समाप्त किया॥
इतने-इतने उच्च उठे कि, लोक शिखर पर जा बैठे।
जो हम चाहें वो ना पाये, क्या हम से तुम हो रूठे ?॥ 1॥

सुख माँगा दुख पाया हमने, माँगा स्वर्ग, नरक पाया।
माँगी शान्ति मिली अशान्ति, माँगा अमृत विष पाया॥
धूप मिली जब माँगी छाया, माँगा धैर्य मिली माया।
माँगा पुण्य, पाप तब पाया, भक्त समझने ये आया॥ 2॥

समझा दो जयश्यामा नंदन! सिंहसेन सुत समझा दो।
एक पद्मरथ राजा वाली, पुण्य-कथा भी बतला दो॥
एक दिवस वह सुने स्वयं प्रभ, जिनवर जी के दिव्य वचन।
जिनको सुनकर मन में गुनकर, छोड़ा राज्य पाठ यश धन॥3॥

राज्य पुत्र धनरथ को देकर, संयम धर आगम ध्याया।
तीर्थंकर प्रकृति को बाँधा, सल्लेखन कर सुर पाया॥

स्वर्ग त्याग कर नगर अयोध्या, सिंहसेन जयश्यामा के।
गर्भ जन्म कल्याणक उत्सव, सुर-रत्नों को वर्षा के॥ 4॥

बचपन गया बनें फिर राजा, देखा उल्कापात तभी।
बनें विरागी तो लौकांतिक, सुर अनुमोदन करे तभी॥
दीक्षा का आहार दान दे, विशाल राजा सुखी हुये।
दो छद्मस्थ वर्ष के गुजरे, केवलज्ञानी आत्म छुये॥ 5॥
जय आदिक पचास गणधर से, समवसरण की सभा भरी।
द्रव्य तत्त्व अध्यात्म शिखर की, प्यारी दिव्य-ध्वनि बिखरी॥
भव्य जनों को ज्ञान मार्ग दे, विहार करना छोड़ दिया।
तीर्थ स्वयंभू कूट शिखर पर, मासिक योग निरोध किया॥ 6॥

इकसठ सौ मुनियों को साथी, बना मोक्ष को पाया था।
शुभ अंतिम संस्कार सुरों ने, कर कल्याण मनाया था॥
जिनके नाम मात्र सुमरण से, अनंत गुण यूँ ही मिलते।
उनको बुधग्रह तक सीमित कर, किसके खुशी बाग खिलते॥7॥

तब ही पुरुषोत्तम नारायण, फिर सुप्रभ बलभद्र हुये।
मधुसूदन प्रतिनारायण भी, इसी काल में हुये हुये॥
ऐसी श्री अनंत जिनवर की, जय बोलो गुण गाओ तो।
फिर जो चाहो वो सब पाओ, इनकी शरणा आओ तो॥ 8॥

कर-कर याद आपकी बातें, रात-रात भर रोते हम।
भक्ति समर्पण का जल भरकर, पलकें अपनी धोते हम॥
माला फेरें करें अर्चना, बीज पुण्य का बोकर हम।
प्रभु 'सुव्रत' का भाग खिला दो, मस्त रहें खुश होकर हम॥9॥

(सोरठा)

सेही जिनका चिह्न, जो प्रभु अनंतनाथ हैं।
वैभव मिले अनंत, जिन चरणों में माथ हैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

अनन्तनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, अनन्तनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(सुविद्या)

भू नभ सागर से भी ज्यादा, तुम हो पूज्य विशाल।
वैरागी गुणवान हमें भी, कर दो मालामाल॥

(9 योनि वर्णन)

जीव सहित जो जन्म स्थान है, वो ही योनि सचित्त।
जो दे साधारण शरीर को, भव-भव जन्म विचित्र॥
सम्मूर्च्छन जन्मों की पीड़ा, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥ 1॥

ॐ ह्रीं सचित्तयोनि जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

देव नारकी जन्म स्थान जो, कहलाता उपपाद।
वो कहलाती अचित्त योनि, जो दे कष्ट विवाद॥
जन्म विक्रिया तन मन पीड़ा, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥ 2॥

ॐ ह्रीं अचित्तयोनि जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सचित्ताचित्त योनियों द्वारा, गर्भजन्म के स्थान।
उन गर्भों की पीड़ा से तो, बच न सके भगवान्॥
प्रभो! हमारी गर्भज पीड़ा, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥ 3॥

ॐ ह्रीं सचित्ताचित्तयोनि जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

देव नारकी तेजस कायिक, के बिन जन्म स्थान।
शीत योनियों के द्वारा जो, पापों भरी खदान॥
शीत जन्म के कष्ट हमारे, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥ 4॥

ॐ ह्रीं शीतयोनि जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

उष्ण योनि से तेजस कायिक, जीवों का हो जन्म।
जल जल कर जो जल ना पाते, रहे सदा जो खिन्न॥
उष्ण जन्म के कष्ट हमारे, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥ 5॥

ॐ ह्रीं उष्णयोनि जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जन्म धरें शीतोष्ण योनि से, देव नारकी लोग।
शीत उष्ण की पीड़ा सहते, हुआ न आतम भोग॥
पीड़ाएँ शीतोष्ण हमारी, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥ 6॥

ॐ ह्रीं शीतोष्णयोनि जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जीव दिखे ना फिर भी जन्में, तो है संवृत योनि।
देव नारकी एकेन्द्रिय की, दुख उत्पत्ति होनी॥
दर्द रोग अनकहे हमारे, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥ 7॥

ॐ ह्रीं संवृतयोनि जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

विवृत योनि से जन्म धारते, दो इन्द्री त्रय चार।
विकलेन्द्रिय का देख न सकते, दुख पूरित संसार॥
दुख पूरित संसार हमारा, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥ 8॥

ॐ ह्रीं विवृतयोनि जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मिश्र योनियों से जो जन्में, गर्भज तन के जीव।
जिनके दुख कहने में सक्षम, नहीं करोड़ों जीभ॥

मल-मूत्रों से भरी वेदना, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥ 9॥

ॐ ह्रीं संवृतविवृतयोनि जन्मपीड़ाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(16. मरण वर्णन)

पल-पल आयु झरे हमारी, प्रतिपल मरना होय।
वही अवीचिमरण कहाता, उससे कोई न रोय॥
पल-पल घुटना पल-पल मरना, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥10॥

ॐ ह्रीं अवीचिमरणवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वर्तमान जीवन की आयु, जब हो पूर्ण समाप्त।
उसे मरण जग कहता तद्भव, मरण बोलते आप्त॥
हे! मृत्युंजय मृत्युवेदना, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 11॥

ॐ ह्रीं तद्भवमरणवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वर्तमान सम भविष्य में भी, मरना जो तन धार।
अवधिमरण वह कहा जिसे हो, बार-बार धिक्कार॥
हे! अनंतगुण अवधिमरण दुख, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥ 12॥

ॐ ह्रीं अवधिमरणवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अज्ञानी मिथ्यादृष्टी सम, आगे मरण न बाल।
वही कहा आद्यंतमरण जो, कुछ तो हरे मलाल॥
हे! अपराजित मरने का भय, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 13॥

ॐ ह्रीं आद्यंतमरणवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अज्ञानी मिथ्यादृष्टी को, जब यम करे हलाल।
बालमरण वह आगम कहता, बुरा करे जो हाल॥

हे! 'सव्वण्हू' बालमरण दुख, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 14॥

ॐ ह्रीं बालमरणवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सम्यग्दर्शन मय मुनियों का, वीतराग धर रूप।
पंडितमरण वही मिल जाये, जो देता चिद्रूप॥
मृत्यु-विजेता मृत्युमहोत्सव, दे दो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 15॥

ॐ ह्रीं पण्डितमरणदायक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम से च्युत होकर मरना, अपयश दे अपमान।
आवसन्न वह मरण जीव का, छीने सुख सम्मान॥
हे! प्रसन्न प्रभु अपयश मरना, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥16॥

ॐ ह्रीं आवसन्नमरणवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सम्यक्दृष्टी अणुव्रती का, मरना समता धार।
वो ही बाल-पंडितमरण दे, स्वर्गों का संसार॥
हे! सुव्रतेश्वर निजसम सुव्रत, दे दो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 17॥

ॐ ह्रीं बालपण्डितमरणवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मिथ्या माया निदान या फिर, धर कर शल्यें अन्य।
मरना सशल्यमरण कहाता, तो कैसे हो धन्य॥
हे! निःशल्य शल्य की शूली, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 18॥

ॐ ह्रीं सशल्यमरणवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रमाद सहित अगर हो मरना, वो है मरण बलाय।
तो कैसे शुद्धातम वाली, यात्रा सुखद कराए॥
वीतराग हे! प्रलय पलायन, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 19॥

ॐ ह्रीं पलायमरणवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तड़प-तड़प कर आर्त्तध्यान से, मरना मरण वशार्त्त।
वही भेदविज्ञान ध्यान बिन, पाता दुर्गति गर्त॥
हे! अनंतसुखी आर्त्तरौद्र दुख, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 20॥

ॐ ह्रीं वशार्त्तमरणवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चार तरह उपसर्ग आए तो, मरना कर संक्लेश।
वो विप्राण मरण दुखदायी, नाशे अपना भेष॥
हे! प्राणेश्वर क्लेश-कष्ट सब, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥ 21॥

ॐ ह्रीं विप्राणमरणवेदना विनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब उपसर्ग अचानक होकर, निकले जाते प्राण।
गृद्धपृष्ठ वह मरण कभी भी, नहीं शरण कल्याण॥
हे! परमेष्ठी आकस्मिक दुख, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 22॥

ॐ ह्रीं गृद्धपृष्ठमरणवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

क्रम क्रम से आहार त्याग कर, नश्वर तजें शरीर।
भक्त-प्रत्याख्यानमरण वो, जयवंतो हो वीर॥
हे! निज रसिक भक्त को निजरस, दे दो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 23॥

ॐ ह्रीं भक्तप्रत्याख्यानमरणदायक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तन सेवा पर से न करा के, खुद कर तजना देह।
वही इंगिनीमरण, मरण दुख, हर ले निःसंदेह॥
हे! निर्लोभी तृष्णा-मृत्यु, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 24॥

ॐ ह्रीं इंगिनीमरणदायक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तज आहार बिना वैयावृत, तजें अचल कर काय।
प्रायोपगमनमरण वही जो, मोह छोड़ वन जाए॥

हे! निर्मोही मोह मरण दुख, हर लो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 25॥

ॐ ह्रीं प्रायोपगमनमरणदायक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जनम-मरण का मरण करे जो, करते हैं अरिहंत।
पंडित-पंडितमरण पूज्य कर, हुये सिद्ध जयवंत॥
हे! वरदानी इसी मरण को, दे दो अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो,सिर पर रख दो हाथ॥ 26॥

ॐ ह्रीं पण्डितपण्डितमरणदायक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

कहीं जनम तो मरण कहीं है, कहीं उदय या अस्त।
कहीं पतन उत्थान कहीं है, कहीं खुशी या कष्ट॥
तीन लोक में तीन काल में, इच्छा रही अनंत।
पेट सिंधु मरघट सम पूरी, कर न सके भगवंत॥

तभी सभी इच्छाएँ तजकर, प्रभु से नाता जोड़।
भाव-भक्ति से अर्घ चढ़ायें, शीश मोड़ कर जोड़॥
इक-इच्छा बस दे दो दीक्षा, प्यारे अनंतनाथ।
हमें नमोस्तु का फल दे दो, सिर पर रख दो हाथ॥

(सोरठा)

प्रभु अनंत भगवान्, चिदानंत चित्राम हैं।
जिनका कर गुणगान, सादर जिन्हें प्रणाम हैं॥

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिजन्म मरणचक्रवेदनाविनाशक श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

अनन्तप्रभु के पदकमल, श्रद्धा से उर धार।
गायें अब जयमालिका, कर वंदन शतबार॥

(लोलतरंग)

पूज्य अनंत महंत जिनंदा, घोर किये तप आतम चंदा।
आत्म समाधि जहाँ मन भायी, जन्म महा दुख मृत्यु नशायी॥
मोक्ष विशाल महालय स्वामी, मुक्ति वधू परमेश्वर नामी।
लाख चुरासहि से डरते जो, जन्म तथा मृतु से बचते जो॥1॥

भक्त वही प्रभु नाम पुकारें , दर्शन को प्रभु राह निहारें।
द्रव्य सँजोकर भाव बनायें, भाव बनाकर पाठ रचायें॥
पाठ रचाकर के गुण गाते, और यही बस लक्ष्य बनाते।
लो कर लो हमको निज जैसे, लो हर लो भव चक्र सरीखे॥ 2॥

लाख चुरासहि योनि नशा दो, पंडित-पंडित मृत्यु करा दो।
हो न सके यह आश दिला दो, मृत्यु महोत्सव पर्व करा दो॥
आतम एक मिले अविकारी, दर्शन ज्ञान बने अधिकारी।
तीन स्वरत्न मिले निजभूति, चार अराधन हो अनुभूति॥ 3॥
पाँच महाव्रत को अपनायें, पाँच महापद को सिर नायें।
षट् अपने कर्तव्य निभायें, षट् निज द्रव्य धरें उर ध्यायें॥
सात सुतत्त्व जिनागम द्वारा, चिंतन मंथन आतम धारा।
आठ हरें विधि अष्टम भूपा, नौ सुपदार्थ धरे निज रूपा॥ 4॥

ग्यारह श्रावक की प्रतिमाएँ, बारह अंग भरी जिन माँयें।
संयम तेरह रूप निराला, चौदह हैं गुणस्थानक माला॥
चौदहवें जिन आप निराले, हो सबके तुम ही रखवाले।
एक कृपा हम पै तुम कीजे, आतम के सब शूल हरीजे॥ 5॥

मोक्ष हमें प्रभु आप दिलाओ, राह हमें सुख की बतलाओ।
हो न सके यदि कार्य यही तो, भक्ति महा सुख शांति दिलाओ॥
आतम का पथ ध्यान कराके, भक्त जनों पर छाँव बना दो।
पंचम काल न मोक्ष मिले सो, मृत्यु महोत्सव पाठ सिखा दो॥ 6॥

खूब कृपा हम पै प्रभु तेरी, दास बने हम भक्त तुम्हारे।
अंतर-आतम को पहचानें, आ पहुँचे अब द्वार तुम्हारे॥
शीघ्र उबारो भाग्य सँवारो, किंतु नहीं जग में तुम आना।
'सुव्रत' की विनती सुन स्वामी, योग्य बना के मोक्ष बुलाना॥ 7॥

(सोरठा)

मोक्ष मिले ना आज, कर्म निर्जरा ना दिखे।
भज अनंत जिनराज, मृत्यु महोत्सव कर सखे॥
अतः भक्त अनुराग, करता है भगवान् से।
मिलता झट वैराग्य, अनंत भक्ति प्रणाम से॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

अनन्तनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥
(शांतये शांतिधारा...)
कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, अनन्तनाथ जिनराय॥
(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री अनन्तनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

नगर 'ताल-बेहट' जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण हुआ जिन चरण में, अनंतनाथ विधान॥
दो हजार तेरह दिसम्बर, शनि अट्ठाबीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु-प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : भक्ति बेकरार है....)

श्रद्धा अपरम्पार है, भक्ति बेशुमार है।
अनंतप्रभु के चरणों में, आरती बारम्बार है॥

चौदहवे तीर्थंकर तुम हो, अनंतनाथ प्रभु नाम है। अनंत...
सिद्धसेन जयश्यामा माँ के, नंदन तुम्हें प्रणाम है॥ नंदन....
श्रद्धा अपरम्पार है.....॥ १॥

अनंतगुणी आतम को पाने, नगर अयोध्या त्याग दिया। नगर....
तभी बने आतम के रसिया, रूप दिगम्बर धार लिया॥ रूप....
श्रद्धा अपरम्पार है.....॥ २॥

समवसरण में हुये पूज्य तो, धरती अंबर गूँज गये। धरती....
चमत्कार आतम अतिशय को, भक्त सुरासुर पूज गये॥ रूप..
श्रद्धा अपरम्पार है.....॥ ३॥

नाम आपका सुनकर स्वामी, राग-द्वेष विधि बंध झड़े। राग....
हमको निज की सुध आयी तो, चरणों में हम आन पड़े॥
श्रद्धा अपरम्पार है.....॥ ४॥

'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, हमको भी अपना लेना। हमको..
सुख शांति दे साथ निभाना,निज सम शीघ्र बना लेना॥ निज..
श्रद्धा अपरम्पार है.....॥ ५॥